पिता बोले थे· ·

पुस्तक संसार, जयपुर

पिता बोले थे...

हरीश करमचन्दाणी



राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर के आर्थिक सहयोग से प्रकाशित

मूल्य : पिचहत्तर रुपये / प्रथम संस्करण : १९९२ / आवरण शिल्पी : योगुम / प्रकाशक : [illegible], पुस्तक भंडार २४८ आदर्शनगर, जयपुर / मुद्रक : कोणार्क प्रिंटर्स दिल्ली ११००३२

PITA BOLE THE Harish Karamchandani Rs 75 00

प्रतिबद्ध मूल्यों के प्रति आस्थावान

पिता को

जिनके सपनों की दुनिया

बहुत सुंदर, बहुत प्यारी और बहुत बड़ी थी

कविताएँ कभी-कभार और झिझक के साथ
लिखी जानी चाहिए असह्य दबाव और
सिर्फ इस उम्मीद में कि दुरात्माएँ नहीं,
सदात्माएँ हमें अपने उपकरण के रूप में चुनें।

—चेश्वाव मिलोश
पोलिश कवि

सत्य के गर्वीले अन्याय न सह मित्र
संघर्ष करता हुआ तू जीवन का खींच चित्र
मिथ्या की हत्या कर
बुद्धि के आत्मा के विष भरे तीरों से
खींच चित्र मानव का
प्राणों के रुधिर की लकीरों से

—मुक्तिबोध

'' एक बड़ी-सी दुनिया देखते हुए

हरीश करमचदाणी के अनुभवा से रची छोटे छोटे शब्दा की दुनिया देखते हुए लगा यह ससार बहुत बडा है । इसे बाहर और भीतर से बार-बार देखा जाए, देखते हुए यह प्रयास भी किया जाए कि इस ससार की छोटी-सी खरगोशनुमा ही सही, छाया मेरे भीतर कही छप जाए।

तभी याद आया, मैं अपने साथियो के साथ १९६५ मे 'वातायन' का नवगीत अक' सम्पादित कर रहा था तय पाया कि छपन स पूव इस सम्पादित स्वरूप को शब्द और अथ के ममज्ञा के पास भेजा जाए, उनके विश्लेपण के साथ ही यह अक प्रकाशित हो। प्रना धनी डा० विद्यानिवास की एक पक्ति थी— "मैंने इन रचनाआ मे बच्चे दूध की गध ली है "

'कच्चा' पीछे छूट जाता है। घेरे रहती है, बसी रह जाती है—'दूध की गध' तब कच्चा । इस तरह जब-जब भी छोटे छोटे शब्दो के ससार देखता रहा हू, कुछ-न कुछ भीतर आ बसा है। हरीश छोटे छोटे शब्दा मे एक काम सौंपता है—"आपको तो बस बचानी है / बच्चे की हसी " बजा दो चुटकी हो गया काम पूरा। मगर नही ठहरकर सोचें तो पाएग यह काम तो तब पूरा होता लगे जब अपने होने के अणु त्रिसरेणु के कालमान के साथ जोड लिया जाए। तब दिखेगा दिखता रहेगा एक बच्चे म बोलता हुआ पिता और पिता के बोल पर प्रश्न लगाता हुआ बच्चा— पिता की हर बात मानना क्या सम्भव भी है ?" लगातार प्रश्न करत रहन का ही अथ है सही उत्तर पाना— 'बच्चे सो जायेंगे तो जागेगा फिर कौन ? तभी तो वह पायेंगे —' बच्चे को लाल-लाल सूरज लगगा बहुत-बहुत प्यारा ' यह कहते हुए हम ही कहेग—' सूरज को कसके भर लेना अपनी बाहो म, हमने तो उसे बस बहुत दूर से देखा है " आज के वातावरण को देखते हुए यही लगेगा कि सूरज को हमने बहुत दूर से ही देखा है, बच्चे की आख और बच्चे की हठ के साथ सूरज को देखा ही नही है, बच्चा है तो पिता का ही प्रतिरूप पर पिता ने अपने नन्हे प्रतिरूप से घर बनाना तक नही सीखा है।

जबकि निरी सच और बहुत बड़ी वास्तविकता यह कि पिता—आदमी बहुत-बहुत जानता है, फिर भी हमारे आस-पास बहुत से ऐसे हैं जो अपने आप तक से अनजान है—इन्ही अनजाना के सन्दभ मे बहुत सहज होकर कह जाता है-- अनजान होना हमेशा बुरा तो नही होता ''यह स्वीकृति अपने आप मे एक महाप्रश्न भी छिपाए हुए है कि आदमी अपने होने के किस रूप से किस सीमा तक अनजान रहे। इस प्रश्न के भीतर-बाहर होते हुए ही कह पाना सम्भव होता है—'नष्ट नही होते सफेद कबूतर और खरगोश, बाज और भेडियो के बावजूद '

बड़े अथवाला यह ससार सोच की आख और वाणी के कमणी हाथो मे रहे, हरीश सहित सभी पिता बच्चे मे यह ससार रचते रहे—

इस कामना के साथ मैं रचनाकर्मी बधु हरीश करमचदाणी के शब्द-कम के विकास की आशा करता हू। उनके शब्दो मे 'कच्चे दूध की गध' हमेशा बनी रहे।

—हरीश भादानी

छबीली घाटी
बीकानेर

क्रम

पिता बोले थे

बच्चा और सूरज

१

बच्चे !
आ, तुझे हवा मे उछालू
किलकारियाँ मारकर
सूरज को कसके
भर लेना अपनी बाँहो मे
हमने तो उसे बस
बहुत दूर से देखा है।

२

बच्चे को लाल-लाल सूरज
लगेगा
बहुत-बहुत प्यारा
अपने सबसे प्यारे खिलौने से भी प्यारा
जानता हूँ
जब वह देखेगा
बहुत मचलेगा।

३

सूरज बहुत गर्म है
बच्चा डग-डग पाँव धरता
आ गया है गली मे
गर्म मिट्टी पर नगे पाव
काम मे उलझी माँ
उठा बगल मे, बिठा आती कमरे मे
हर बार।
बच्चा खिडकी की सलाखो से
झाकते सूरज को देखता है
खिलखिलाता है।

४

खिडकी के पास खडे बच्चे की
आँखो से आकाश को देखो
आकाश दूर नही लगेगा
बच्चा अपनी बाँह सलाखो के बाहर निकाल
मुट्ठी मे पकडता है हवा को
हवा तुम्हे थमी हुई नही लगेगी
बच्चा अपना हाथ हिला हिलाकर
बुलाता है जब सूरज को अपने पास
सूरज तुम्हे उतना गरम नही लगेगा।

पहल

बच्चों को शोर मचाने से रोको मत
बच्चों को सोने को मत कहो
बच्चे सो जायेंगे तो जागेगा फिर कौन
बच्चे चुप हो जायेंगे तो जगाएगा फिर कौन।

प्रतिफल

बच्चे की हँसी में
आप पा सकते हैं फिर से
वह सब कुछ जो छीना रौंदा जा चुका हो आपका
आपको तो बस बचानी है
बच्चे की हँसी ।

तब तक

बच्चे को जी भर कर लेने दो शरारतें
तोड़ने दो उसे खिलौने
फेंकने दो अपनी दूध की बोतल
जो कुछ चाहे वह करना   करने दो
बस कुछ बरस ही तो हैं उसके पास
करने को सब कुछ।

अनुकरण

किसी इतवार को
या छुट्टी के दिन
बच्चों के बहाने
खेलेंगे हम घर-घर वाला खेल
शायद इसी तरह
हम सीख जाएँ एक दिन
घर बनाना।

जिज्ञासा

बच्चा
नही डरता किसी से भी
उनसे भी नही
जिनसे डरना चाहिए
मसलन
वह नही डरता साँप से
या कटखने कुत्ते से
या भिनभिनाती मधुमक्खी से
और माँ के उठे हाथ को तो
हँसता लपक लेता है
दुलार समझकर

मुझे डर है
किसी दिन वह
हथेली पर धर लेगा जलता अँगारा
जम्हाई लेती बिल्ली के गिनने लगेगा दांत
बिच्छु के डक पर रख देगा पाँव
या फिर पूछने लगेगा
ऐसे सवाल
जिनके नही होगे
कोई जवाब ।

हिसा

वीडियो पर फिल्म देखती
सब्जी काटती माँ का ध्यान चूका पाकर
बच्चे ने उठा लिया चाकू
अपना खिलौना छोडकर
मैं डर गया था
चाकू हाथ मे लिये बच्चे की आखो मे चमक थी ।

पिता बोले थे

पिता बोले थे
सदा सच बोलना
मैं झूठ कभी नही बोला
पिता बोले थे
हमेशा ईमानदार रहना
मैंने बेईमानी नही की कोई
पिता बोले थे
न्याय के संग-साथ रहना
मैंने अन्याय का दामन कभी नही थामा
पिता बोले थे
सदा सुखी-सम्पन्न रहना

पिता की हर बात मानना क्या संभव भी है ?

बावजूद

उसकी दुनिया दूसरी थी
औरो से अलग
उसमे सपने थे
खुशबू थी
हँसी थी
सफेद कबूतर थे
और भोले खरगोश भी
हाँ, उसकी इस दुनिया मे
छल फरेब न था
झूठ-प्रपच न था
घात-प्रतिघात न था
उसकी इस दुनिया मे ऐसा कुछ न था
जो दुनिया मे था बहुत ज्यादा था
लोग हँसते थे
उसकी दुनिया की बात पर
बताते थे उसकी दुनिया को बच्चो की दुनिया
और कहते थे उसे बच्चा
और कर रहे थे एक बेसब्र इतजार
उसके बडा होने का।
यानी उसकी दुनिया के नष्ट होने का
मगर यकीन मानिये

यह दुनिया नष्ट न हो सकी
ठीक वैसे ही जैसे
नष्ट नहीं होते सफेद कबूतर और भोले खरगोश
बाज और भेड़ियों के बावजूद।

ह्रास

आकाश से भी ऊँचा होगा तुम्हारा नाम
हाँ, सच निकला पिता का आशीर्वाद

अब आकाश बहुत नीचे है।

शहर गये पिता

वह भर लेगा
अपनी सारी जेबों में
मुट्ठी खोलकर पिता
जब बिखरा देंगे रंग
और बाँट देगा
दोस्तों में
इस कल्पना पर
अपनी
खुश होता सीटी बजाता है

डाकिये की पीठ में गड़ी
माँ की आँखें मगर
आज भी गीली हैं

वह औरत

अपमान और प्रताडना के खिलाफ
चीखती नही
नही करती है कोई प्रतिरोध
सब कुछ सहती है
चुपचाप रोती है
और करती है इतज़ार
तीन लडकियो के बाद
पुत्र जन्म की उम्मीद के साथ
किस्मत बदलने का भी।

बीमार बच्चे की माँ

दुनिया की सबसे दुःखी औरत होती है
पर वह कमजोर नही होती
वह जोरो से रेडियो चलाते
पड़ोसी से लेकर
लापरवाह डॉक्टर तक सबसे
लड़ सकती है
उसे जरा-सा भी शक हो जाये
दवा के बारे मे
केमिस्ट का गला पकड़ सकती है
अपने जेंटिलमैन पति की तरह
मिमियाकर चुप नही रह जाती
अस्पताल मे भर्ती बच्चा जब बेचैनी से
करवट बदलता है
वह ऊँघते जेठ को
झकझोरकर उठा सकती है
जिससे उमर भर करती रही पर्दा
बीमार बच्चे की माँ को कुछ नही भाता
पति का साथ भी नही सुहाता
हर वक्त घेरे रहती है उसे बच्चे की पीड़ा

आप बीमार बच्चे की वेदना
माप सकते हैं
उसकी माँ का देखकर चेहरा ।

माँ से दूर

दु ख मे बहुत याद आती है माँ
यह नही कि माँ पास होती है
तो दु ख हो जाते हैं खत्म या कम
उसके दु खो मे और जुड जाते है माँ के दु ख
बढ जाती है सख्या उसके दु खो की पर
न जाने क्यो चाहता है वह
उसके पास ही हो तब माँ
दु ख मे बहुत याद आती है माँ।

आप वीमार वच्चे की वे
माप सकते हैं
उसकी मां का देखकर

अनजान होना

चिड़िया को नहीं मालूम
कितना मीठा गाती है वह
मोगरा भी है बेखबर अपनी महक से
और हवा बहती जो हरदम
नहीं पता उसे कितनी जरूरी है वह
और आदमी जो जानता इतना ?

अनजान होना हमेशा बुरा तो नहीं होता।

अब नही डरती चिडिया

चिडिया को भय था
उसका मासूम नाजुक बच्चा
झुलस जाएगा जो निकला नीड से
नेह से नरम
पखो मे छिपाना चाहा
सबसे बचाकर
अब तक
पर ऐसा हुआ है कभी
धूप निकले और उजाला न हो

एक दिन उड चला बच्चा
सहमी मा ने आशका बोझिल
निकाली गर्दन और
उडते दिखे बहुत सारे परिन्दे
आकाश मे ऊपर बहुत ऊपर
पहचाना तो नही गया
उनमे वह
पर अब वह डर से परे थी।

अनजान होना

चिड़िया को नही मालूम
कितना मीठा गाती है वह
मोगरा भी है बेखबर अपनी महक से
और हवा बहती जो हरदम
नही पता उसे कितनी जरूरी है वह
और आदमी जो जानता इतना ?

अनजान होना हमेशा बुरा तो नही होता।

अन्तर

रोज़ चुनती है दाना
और डाल देती है बच्चे की चोंच में
कोई गोदाम नही उसके पास
एक दाना तक नही कल के लिए
आकाश में उड़ती चिड़िया है
घिसटती-रेंगती चींटी नही
वह।

सुख

पेड पर उगती थी टॉफियाँ
फव्वारे उडेलते थे आइसक्रीम
जिन्हें मिल बाँट खाते तुम
नही ही भूलते थे
मोची काका के कालू को भी

पृथ्वी पर उपलब्ध
सुख
सारा पाने की कोशिश मे
तुमने खो डाला
साझा सुन्दर सपना
कितना अपना
सच बताना !
तुम जानते तो हो ना
सुख क्या है ?

सब सरल सहज ही

लोगो !
तुम्हे लगता है ना
नदी का जल मीठा
आकाश असीम नीला
धरती बहुत प्यारी, बहुत अपनी
लोगो !
तुम भी चाहते हो ना
मजबूत रस्सी का झूला
जिस पर बडे पेग भरती
तुम्हारी सतान
धरती से जुडी रहकर भी
छू सके आकाश को
लोगो !
नदी का जल
बनकर बादल आकाश मे
बरसता है धरती पर
गेहूँ की सोधी और मीठी रोटी खाते
यह जानते हो ना
तो यह भी जान लो रस्सी का बनना
जल का बादल
बादल का जल

बनना है
और यह रस्सी तुम्हे ही बनानी है
जिसके बने झूले पर
बडे पेंग भरती
तुम्हारी सतान
धरती से जुडी रहकर भी
छू सके आकाश को ।

निर्वैयक्तिकता

कभी मन हो जाता
उदास
कभी अजनबी और अचेत भी
निज का कसैला
उगला धुआ
करता दीवारें
काली भीतरी
हाय कैसी वेदना
विकलता, छटपटाहट
कील जग घाव घोलती
दु ख एक वह भी होता
पर अँधेरा इतना
स्व का ही उपजाता
कितना भी गहन घनीभूत हो
वह अँधेरा नही ही उपजाता
मन तब भीतर ही भीतर जगमगाता
होता न यू आकुल कलुषित
मन को अधूरा नही ही बनाता ।

माइक्रोस्कोपिक आँख

(गोविन्द निहलाणी की फिल्म 'पार्टी' देखते हुए)

तुम देख रहे थे
सच्चाई को
उसकी कोशिकाओं को, ऊतक को
तन्त्र-तन्त्रिकाओं के जाल को

और लो
सटा दिया
हमारी आँखों से
तुमने
आई पीस ।

बाद मे

वे चुप थे
जब हो रही थी हत्या
उनके सामने
हाँ, उन्हे अब शर्म आ रही थी
कि हत्या हो रही थी
और वे चुप थे
किया नही जरा-सा भी प्रतिरोध
उन्हे सचमुच शर्म आ रही थी
पर उससे क्या फर्क पडता है
अगर उन्हे शर्म नही भी आ रही हो
अब।

युद्ध

हर युद्ध का अंत एक-जैसा होता है
हर युद्ध में चलती हैं बंदूकें / फटते हैं बम
बिकते हैं हथियार
मरता है आदमी
मरती है आदमियत
हाँ
हर युद्ध में
मिलती है शासकों को मुक्ति
जनता की पीड़ा से उपजे
जनान्दोलन, जन असंतोष से

हर युद्ध में प्रजा महसूसती है गौरव अन्धा होने का।

भाड़े के सिपाही से

करीब होने के लिए
उपयोगितावाद का फलस्फा
बहुत मुफीद रहा है
प्यारे
बरसो से है आजमाया हुआ
बिला-शक तुम भी आजमा लो इसे
उपयोगितावाद तो बाकायदा
विश्वविद्यालय स्तर का विषय रहा है
उपयोगी होना यूँ भी
बुरा नही होता
अपने कधे ही तो देने पडते हैं
उधार
तुम्हे इससे क्या
बदूक किस पर तनी है
पर जिसके हाथ मे है
उसके तो हो गए ना तुम करीब
इतने कि
बदूक चले
तो लगे तुम्ही ने चलाई है
निशाने की दाद भी तुम्ही को मिलेगी
और इतना तो तय है कि

इस तरफ से चलो गोली
तुम्हें नहीं लगेगी
उधर से लग भी गई हो तो क्या
मालिक के वफादार कहलाओगे।

दृष्टि

कबूतर उड नही रहा
दुबका बैठा है कोने मे
कट गया है पख उसका
पर बबलू अब उसे पकड नही रहा
जो तब से कर रहा था उछल-कूद
उसे पकडने को
पूछने पर
घायल को क्या पकडना ?
कह कधे उचका देता है
डॉक्टर पिता घूरते हैं उसे

अगले पेशेन्ट को भेजो
चीखते हैं
झटककर नोट
डाल देते है भरी दराज मे
बुखार से तपा रिक्शेवाला
लडखडाता निकलता है कमरे से

कबूतर अब भी दुबका बैठा है कोने मे।

बडा और सच्चा

चोरों की तरह
दबे पाँवो नही आता है
विचार
जब भी आता है
अँधेरे को चीरता
फैल जाता है धमाके के साथ
प्रकाश-सा
हाँ
यही कसौटी है
शायद उसके बडा और सच्चा होने की
वह जब भी लेता है
जन्म
प्रसव-वेदना से छटपटाती हैं
मस्तिष्क की तन्त्रिकाएँ।

मन नहीं कांच

कांच गिरा
किरच किरच बिखर गया
चुभने लगा जहां गडा
पर वह फिर भी अच्छा था
मन से
जो टूटा, बिखरा टुकडा-टुकडा
चुभा
जहां गडा,
वहां भी
जहां नही गडा ।

सभ्यता

मनुष्य ने किया
आग का जब आविष्कार
झुलसा ही होगा हाथ
बनाया जब हथौड़ा
माथा होगा फोड़ा
तेज़ की जब छुरी
काट ली होगी उँगली
जोता होगा जब बैल
गड़ा होगा पेट में सींग
तैयार किया जब आईना
डरा होगा उसमें झाँककर।

पुनरावृत्ति

बहुत छोटी सी कहानी है
मनुष्य के विकास की
इतनी छोटी कि
फिर-फिर आ जाता है
वही प्रस्थान-बिन्दु पर
मनुष्य
जहाँ से शुरू
हुई थी उसकी यात्रा।

सर्वहारा

लकडी की तलवार से
लडी नही जाती लडाई
किया जा सकता है नाटक
लडने का
लडने के लिए तो चाहिए
तलवार लोहे की
पाने को जाना ही होगा
उन तक
पास जिनके कुछ भी नही
सिर्फ लोहा है।

समानान्तर

बहुत फर्क था उन दोनो मे
यह जब हँसता था किसी लतीफे पर
वह गुमसुम-सा सिगरेट पी रहा होता था
यह जब टहलता था गुनगुनाता हुआ
वह घुटनो मे मुँह छिपाए सोचता होता था
यह जब पढता था अखबार
वह खोया होता मेहदीहसन के जादू मे
यह जब करता तारीफ कल देखे नाटक की
वह पानी मे बिना गिने फेंकता जाता था कंकड
यह जब कुछ न कर रहा होता
वह कुछ-न कुछ ज़रूर कर रहा होता

हाँ, बहुत फर्क था उन दोनो मे
यह जब दर्द से तडप रहा होता
वह रो रहा होता चुपचाप ।

उथलापन

कभी नहीं डराती
आकाश की असीमता
समुद्र की विशालता
पहाड़ की ऊँचाई

झाँकिए
कुएँ में
तो डर जायेंगे।

कसौटी

अज्ञान के बीहड़ में
भटक गया ज्ञानी
वह

भटका ही तो

फिर
ज्ञानी
हुआ कैसे ?

अनात्मीय मुक्ति

एक शहर से निकल
दूसरे शहर पहुँचना,
दफ्तर से निकल
घर जाने-सा
नहीं होता
घर तो बस घर होता है
देता है अपनापन
शहर का द्वार
जाने को हमेशा
खुला
रहता है।

निष्पत्ति

वह खोदता रहा ज़मीन
एक दिन पाया उसने
पैरों के नीचे कुछ भी नहीं था

वह तोडता रहा सम्बन्ध
एक दिन पाया उसने
निपट अकेला था

वह बूझता रहा अपने ही सवाल
एक दिन पाया उसने
अनुत्तरित रह गये सारे

वह छेडता रहा तान अपनी
एक दिन पाया उसने
सुननेवाला ना था कोई

वह लडता रहा अकेला
और एक दिन पाया उसने
पराजित हो चुका था।

नियति

आँधी मे गिरे पत्ते
पत्तो का क्या ?
यूँ भी झडते
पर तने को इस तरह
होना था अकेला ।

अन्वेषी

राह नहीं देखी-भाली
पर
यह तो
कोई
कारण
नहीं
कि बदल
दी जाए।

निरन्तरता

अवकाश
और अन्तराल
के ठीक बाद
जा पायेगा
दिनमान ?
बदलकर
राह अपनी
लाँघकर
सोमवार

दोस्त

सन्नाटे को बुहार फेंकने के लिए
उसने खोल डाली तमाम खिडकियाँ
दरवाज़ा भी
रेडियो की आवाज़ कर दी बहुत तेज़
अलबम से निकाल बिखरा दी तमाम यादें
मगर सन्नाटा धूलकणों-सा
पसरा बैठा था फर्श-दीवारों पर
एकान्त की सघनता नहीं हुई जरा विरल
घबराकर फिर उठा ली किताब
और अब सन्नाटा गुम था।

धार

बरसा
जोरों से
जल
हो गया
सब कुछ जलमय
पर
आग
जलती रही

आग का पानी
अभी
उतरा ना था।

आगाह

अंधेरा
झपट्टा मार दबोच लेगा
चुस्त चीते की तरह
और नाखूनों, पंजों और मजबूत जबड़ों से
बच नहीं पायेगा
रोशनी का बदन
कहो रोशनी से
अपनी रफ्तार तेज करे।

सहयात्री

उस पार ज़िन्दगी
हो कि न हो
पर
यह तय है
इस पार ज़िन्दगी
आ सकती है
तुम चाहो तो

मजबूरी

देना चाहती है सब कुछ
पर है नहीं कुछ भी देने को
बड़ा दुःख यह
कौन जानता
सूखी नदी का।

थार मे

रेत मेरे चेहरे पर
रेत मेरे बालो मे
रेत तेरे चेहरे पर
रेत तेरे बालो मे
रेत हर जगह, हर कही
रेत ! तू तो यहा ईश्वर है
पर ईश्वर कहाँ है।

नदी का सपना

नदी नही बही
इस बार भी
बहुत दु खी थी नदी
नही देखा गया
कवि से
दु ख नदी का
इस बार भी
बहुत दु खी थे कवि
कवि का दु ख अपना न था
वे नही होते दु खी
इस बात पर
किसी और बात पर हो जाते।
पर नदी
सपने की तरह दु ख को नीद मे भी
रखे रही साथ
करती रही याद
नदी की नीद के सपने मे
इस बार भी थी
बरसात

थार मे नदी

थार के रेतीले विस्तार मे
दे रही है पानी
मिट रहा बाझपन
हो रही उवरा हौले हौले
सद्य गर्भा-सी शरमा रही है धरा ।

परिवर्तन

खूब बरसी बारिश
और बदल गया
उस नदी का नाम
अब वह सूखी नदी नहीं
पर सुखी नदी है।

ढलान पर

वहता रहा जीवन
नदी की तरह
मोड आया तो मुड गया जीवन
नदी की तरह
ढलान पर
तेज वही नदी
पर
धीरे धीरे
ढला जीवन।

नया सपना

फुटपाथ पर सोया लडका
देखता है सपने मे
माँ-बहन भाई को
हर रोज टाँग तोड रिक्शा चलाने के बाद
मगर आज उसने देखी
लाल-पीली आकाश छूती पतग भी
गाँव मनीआर्डर भेजने के बाद
उसकी जेब मे अभी था डेढ रुपया।

दूध बेच देता है सूरज

सूरज दूध बेचता है
ताजा सोंधा गाढा दूध
नापकर उडेलता है भारी बतन मे
उठाते जिसे छलक छलक जाता ह दूध
टागें लरजती हैं
दातो को भीच उठाता है
भैंस के खालिस दूध मे ताकत होती है
पर वह तो पीने से आती है
बेचने से नही
यह सब जानते हैं—सूरज भी
फिर भी
दूध बेच देता है
वह दूध नही पीता।

महानगर की बस मे

भीड भरी बस मे
अनजाने मे कुचल गया पाँव
माफ करना भाई, कहा सहयात्री ने
बहुत अच्छा लगा,
दिया घाव
पर बहुत दिनो बाद मिला
एक आत्मीय सम्बोधन ।

महानगर मे नौकरी

प्रवेश करते ही दफ्तर मे
खो डालता है वह अपनी पहचान
और टाँक लेता है
कमीज़ की जेब पर
अपना पहचान पत्र ।

झुनझुना

बस बजता है झुनझुना
सुनकर चुप हो जाता
रोता मुन्ना
बडा करिश्माई है यह खिलौना
कुछ भी तो नही इसमे
पोल के भीतर ककड पत्थर बस
न दूध पाता है, न रोटी
न माँ का प्यार
जब-जब सताती है
भूख
पेट की
प्यार की
वह रोता है
और बज उठता है झुनझुना
रोता मुन्ना हो जाता चुप
सुनकर जादुई सगीत

आओ, रुकें और देखें
मुन्ना कब उठा फेंकता है
झुनझुने को।

षडयन्त्र की काट

तुम खड़ा कर दो सूरज के सामने
एक नकली सूरज भव्य और विराट् उतना ही
उतना ही गर्म, उतना ही रोशन
कि लगे बिलकुल असली
रात दिन, ऋतुचक्र हो जाए सब गडबड
राहू-केतु भी बेचारे चकरा जाएँ।
घूमती पृथ्वी भी ठोडी पर हाथ धर ठिठक जाए
वर्षों से अर्घ्य चढ़ाती बुआ भी आ जाए भुलावे मे
पर यकीन रखो
बच्चा
सूरजमुखी को देखेगा
और पहचान लेगा असली सूरज को।

संयम ?

बछड़े को है इंतजार
दूध दूह लिये जाने का
उसके बाद हो तो
मिलेगा उसे माँ का सामीप्य ।

उससे पहले

एक दिन सब कुछ नष्ट हो जाएगा
न बचेगी यह पृथ्वी, न रहेगा सूरज
पता नही क्या शेष रह जाएगा
शायद एक विराट् शून्य
मगर उस एक दिन को आने मे अभी
करोडो करोड वर्ष बाकी हैं
तब तक तो यह रहेगी धरती
जलता रहेगा सूरज
चलता रहेगा ससार
और हा, तब तक तो बेहतर बन चुकी होगी दुनिया
इतनी बेहतर
कि उसके नष्ट होने पर होगा सचमुच दु ख।

यथार्थ

दूर, यहाँ से दूर
बस्ती में जब उठता दिखाई दे धुआँ
तो सोचा जा सकता है
जल रहा है चूल्हा
सिक रही हैं गर्म
तवे पर गोल-गोल
महकती रोटियाँ
यह भी माना जा सकता है
आग के चारों ओर बनाकर घेरा
वे कर रहे हैं कोई लोक-नृत्य
पर हर बार की आशंका ही
हर बार बनती है क्यों सच
कि जल रही है बस्ती।

केचुल

कहाँ-कहाँ नही भटका
पर सोचा एक दिन
यूं भटकते-भटकते
बीत जायेगा जीवन
क्या मिला ?
मिलेगा क्या ?
ठहरा
ठिठका
और गया सिमट भी
फिर नही निकला
कभी बाहर
पर यह भी तो
नही था
निदान।

रिश्ता

देखा उसका दर्द
लगा बहुत अपना
पहचाना हुआ
पहली मुलाकात मे
दर्द बिलकुल वैसा ही तो था
बीच जिसके गुजरा था उसका भी
जीवन
बिना आहट के।
मेरे साथी ओ
मेरे सहोदर हो तुम।

दूर होता हुआ सपना

मुनादी पिटवा दो
उसके गुम हो जाने से पहले ही
वरना वह नहीं हो मिलेगा फिर
कितना भी चीखोगे, खोजोगे
वह लौटकर नही आयेगा
अभी तो वह तुम्हारी पुकार की परिधि मे है
उसे बतला दो
दिला दो विश्वास
अब भी वह तुम्हे है उतना ही प्यारा
लगता है उतना ही सुदर
तुम्हारी बेरुखी से रूठा ही तो है
लौट आएगा
और हाँ
जब लौट आए
लगा लेना उसे सीने से
चूम लेना उसका माथा
रखना उसे अपने दिल के समीप
वह फिर कभी नही जाएगा तुमसे दूर।

दुनिया है

पिता की सलाह पर
गर्मियो की छुट्टियो मे पढ डाली उसने
पब्लिक लाइब्रेरी की बहुत मारी किताबे
और चाहा देखना
एक ईमानदार और गच्चा आदमी
यह आदमी उसकी पढी कई कहानियो का
नायक था
पिता पहले तो चौके, फिर हँसे
चलो कोशिश करते हैं
पडोस पर मन-ही मन नज़र डाली
पास मे रहते थे नामी वकील
खूनी को भी तगडी फीस मिले तो फाँसी से बचा लाते थे
उनकी बगल मे थे डॉक्टर
अस्पताल के मरीज़ फीस लिये घर आते थे
पिछवाडे रहते थे प्रोफेसर साहब
देसी घी और गेहूँ गाव के शिष्य का ही खाते थे
फिर ध्यान दिया दोस्त, रिश्तेदारो पर
लडके का मामा इजीनियर था
फँसा था तो उन्ही के पास आया था
साढू उनके बडे व्यापारी थे
पूरे शहर मे मिलावट के कारण नाम था

दोस्त गुप्ता सेलटैक्स मे इंस्पेक्टर था
लड़का मुफ्त मे सिनेमा उनके साथ ही जाता था
हाँ, उनका छोटा भाई
जिसे कई बार भी
उन्होने डाँट पिलाई
बेरोज़गार था
और था फिलहाल ईमानदार भी।

प्रतिश्रुत

तुम्हारा काम था दीया जलाना
तुमने जलाया
दीये का काम था रोशनी देना
उसने दी
रोशनी का काम था अँधेरा मिटाना
उसने मिटाया
तेल चुक गया
दीया बुझ गया
रोशनी ना रही
अँधेरा फिर छा गया
कैसे कहते हो
तुम्हारा कोई दोष नही।

अतराल के बाद इतिहास

शब्द लिखे जा रहे हो जब
काल पुस्तक पर
अमिट स्याही से
अंकित नही होता
किसी नायक का नाम
मोटे और बडे अक्षरो मे
दर्ज होती है तो
बस गाथा
सच्चाई की पवित्रता लिये
फिर धीरे-धीरे बीतता है समय
वर्तमान बन जाता है अतीत
भविष्य चौखट पर खडा होता है
तभी होता है एक अदृश्य चमत्कार
होता नही विस्फोट या धमाका कोई
सिर्फ उभर आते हैं कुछ नाम
सैकडो हजारो नामो मे से
चमकने लगते हैं स्वर्ण अक्षर बनकर
चीर कर सीना इतिहास का ठीक बीच से
शेष सभी कुछ खिसक जाता है
जादुई अदाज मे
हाशिए पर।

विभ्रम

धीमी आंच पर पकती
धीरे, बहुत धीरे
खिचडी होगी
क्रांति
तो नही होगी।

अनायक से

अगला वार
अब
किस पर होगा
शत्रु !
जानते भी कि
हर वार तुम्हारा अचूक
कोई नही तत्पर
मित्र बनने को तुम्हारा
आवेग कौन-सा तीव्र
उनकी वीरता का
या तुम्हारे शत्रुभाव का
उत्तर
तुम ही
दो
शत्रु !

विषदन्त

खलनायक की मुसकान
कुटिल तो है पर सम्मोहक भी
तीव्रावेग के साथ ले लेती है
अपनी गिरफ्त मे
और जकड लेती है बडे इत्मीनान के साथ
आपकी हँसी।
हाँ, एक बार जब वह डस लेती है
आप हँसना भूल जाते हैं।

अनायक से

अगला वार
अब
किस पर होगा
शत्रु !
जानते भी कि
हर वार तुम्हारा अचूक
कोई नहीं तत्पर
मित्र बनने को तुम्हारा
आवेग कौन-सा तीव्र
उनकी वीरता का
या तुम्हारे शत्रुभाव का
उत्तर
तुम ही
दो
शत्रु !

पिता बोले थे

अपने खिलाफ

और फिर एक दिन
पेड को आएगा
जोरो का गुस्सा
कांपने लगेगा वह थर-थर
मुमकिन है
वह चल ही पडे
अपनी जडो के साथ
कही भी
किसी भी दिशा मे
और यह तो तय है ही
वह
कटने से कर देगा इनकार
कुल्हाडी के लिए।

निरीहता

आंखो मे भरकर आसू
जब तुमने देखा
दुनिया को
बहुत धुंधली दिखाई दी तुम्हे
पर वह देख रही थी तुम्हे
बहुत साफ-साफ
और उसका यू देखना
तुम्हे बना रहा था और कमजोर।

प्रक्रिया

सवेरा होने भर से नही टूट जाती है नीद
खोलनी पडती हैं आँखें भी
समझना होता है रहस्य मायाजाल का
भेदना पडता है चक्रव्यूह
हाँ, सिफ पढना ही नही होता अखबार
जानना भी होता है
कि घटना क्यो बनी है खबर।

भग दिवास्वप्न

एक दिन जब
वह
खोद रहा होगा
बजर धरती
तो होगी
झन्न सी आवाज
कुदाल उसकी
टकरायेगी पीतल की गागर से
भरे होंगे जिसमे
सोने के सिक्के
तब ही तो फिरेंगे
दिन
उसके,
घर के,
तब ही तो
चुका पायेगा कर्ज,
निपटायगा बिटिया का ब्याह,
और इस सपने मे खोया
उठाने लगता है तेज़ी से हाथ
निगरानी पर निकलता ठेकेदार
देखकर मुसकराता है

(बूढा-२२ रुपये दिहाड़ी मे अच्छा है)

देखता ठेकेदार
चौंकाता है उसे
गागर निकल भी आयी तो क्या
उसे तो मिलेगी वही दिहाड़ी या कुछ बख्शीश
टूट जाता है उसका दिवास्वप्न
थम जाते हैं उसके हाथ।

अन्नदाता

हुज़ूर!
माई-बाप!
मैं बोता हूँ अन्न फिर भी भूखा क्यों हूँ
मैं नहीं बोता हूँ अन्न, फिर भी नहीं भूखा इसलिए
हुज़ूर!
माई-बाप!
फिर मैं भी क्यों बोऊँ अन्न ?
यहाँ रुकिये   यह सवाल उसने नहीं किया
काश! उसने यह सवाल कर ही लिया होता।

३ दिसम्बर के लिए

(भोपाल गस त्रासदी के सन्दर्भ में)

सपने देख रहा होता है आदमी
दिनभर की तकलीफो से
थका घायल
तभी तीखी बारूदी गंध
गलाने लगती है
फेफडे
और सपने दम तोड देते हैं
मरणासन्न अकेला छोडकर
आदमी को
मुर्दा-बेजान दीवारें शहर की
चीखने लगती है
सांय-सांय खौफ उपजाती
भूतही आवाजें
शेयर बाजार मे
आदमी की कीमत
गिरावट की ओर
लुढकती है तेजी से
भोपाल !
तुम एक शहर नही हो सिर्फ

साक्षी भी हो।
आदमी के
कीट कोडे मे
तबदील होने के।

दगा और कवि

उस दिन
कवि
बहुत रोया
देखा जब
लाशें गिरने और गिनने के बाद
मगर उनका शोक मनाने से पहले
जानना चाह रहे थे वे
लाशों का धर्म

कवि की आँखों के नीचे
काले गड्ढे होते जा रहे थे
लगातार गहरे और बड़े
पर कवि की आँखों में अब भी थी
एक महीन-सी चमक
जो आयी
बचाते देख
जान पर खेलकर
दूसरे धर्म के बच्चे को
यह ज़रा-सी चमक
पस्त चेहरे पर
और उसके मुकाबले भी
हावी थी।

बोझ

दु ख को बोझा बना ढोते है
कांखते, कराहते जाते हैं
पीठ से उतार नही फेंकते
और यूं आश्रित दु ख अपग हो
घसीटता है जिन्दगी को ।

साध्य

हम माथे पर बल डाले
बूझते हैं जटिलतम प्रश्न जीवन के
खोजते हैं अर्थ जीवन का
और भूल जाते हैं जीवन जीना।

दु ख

दु ख आदमी को तोडता है
दु ख पहचान कराता दोस्त-दुश्मन की
दु ख गढता परिभाषा सुख की
दु ख बनाता आदमी को आदमी ।

होरी की गाय

उसने चाही थी एक गाय
जो दूध देने वाला चौपाया भर न थी
थी एक सपना
उन आँखो का
जो सच को देखते देखते भी पथराती नही।

कवि से

थाम लो क़लम हाथ में
लिखनी ही पड़ेगी कविता
क़लम थामे हाथ को
क़लम कभी चुप नहीं बैठेगी
राह दिखाती रहेगी हाथ को
आँख बनकर।

होरी की गाय

उसने चाही थी एक गाय
जो दूध देने वाला चौपाया भर न थी
थी एक सपना
उन आंखो का
जो सच को देखते देखते भी पथराती नही ।

कवि से

थाम लो कलम हाथ मे
लिखनी ही पडेगी कविता
कलम थामे हाथ को
कलम कभी चुप नही बैठेगी
राह दिखाती रहेगी हाथ को
आंख बनकर।

बाकी अपने जैसे

आकाश से उतरता नही कोई देवदूत मदद करने को
सकट मे पडता है जब कोई भला आदमी
पार निकलने को
मारता है हाथ-पाँव
डूबने लगता है भँवर मे
गिनने लगता है उँगलियो पर
कुछ परिचित नाम
फिर काट डालता है मन-ही मन मे
उनमे से कुछ नाम
हाँ, रसूख वाले बडे आदमियो के नाम
कोई मुगालता नही उसे
उनके बारे मे
एक-एक कर काट डालता है
शेप बचे नाम भी
यह सोचकर
कि उनके कष्ट कौन से कम हैं
लाद दे जो अपना भी बोझ ।

पुराने दोस्त

एक दिन सभी होंगे इकट्ठा
और याद करेंगे
साथ गुज़ारे बीते दिन
होगा ज़रूर
कभी आएगी जोरो की रुलाई
तो
कभी गूँजेंगे छत हिलाते ठहाके
और जब यह
सब कुछ
हो चुका होगा
किसी घटना की तरह
और लग आएगी
जोरो की भूख
तो
थाली पर टूटेंगे नहीं
धकियायेंगे नहीं
पहले की तरह
चुपचाप भले मानुस बनकर
पहले आप का निभायेंगे शिष्टाचार
खाक, क्या तब भी
आएगा उतना ही मज़ा।

सुरक्षा

निंदियाई आँखो से
देखती हैं बिटिया पूछती-सी
कहाँ है बिछौना मेरा
सो सकू जहाँ इत्मीनान की नीद
चाहता हूँ अपनी बाँहो को
बनाकर बिछौना
सुला लू
सोचता हूँ
खोजता भी
मगर मेरी बाँहे जकडी रह जाती हैं
और चाह कर भी नही उठा पाता उसे
अपनी हथेलियो से
तब से खोजता भटक रहा हूँ
एक छोटा-सा बिछौना
जिसमें भरी हो सपनो से लबालब
मेरी बिटिया की नीद।

बिटिया की गुल्लक

ज़रूरत के बुरे और मजबूर दिनों मे
फोड़ी गयी गुल्लक
इस वादे के साथ
कि नयी गुल्लक भर दी जायेगी पहली तारीख को
तब से हर महीने पहली तारीख तो आती है
पर गुल्लक खाली ही रह जाती है
जरूरतें गुल्लक से कहीं बड़ी जो हैं
हर बार शर्मिन्दा पिता
पूछते हैं दुलार से
कातर भाव से
बिटिया, क्या तुम्हारे पास थी एक ही गुल्लक !

पुराना किला

खंडहर बनते जा रहे किले में
आये हैं विदेशी पर्यटक
कई दिनों बाद
बूढ़े गाईड को मिला है अवसर
अपनी टूटी-फूटी अंग्रेजी में
किले का इतिहास बताने का
दरके काँच वाली टॉर्च से
पीली रोशनी गिरती है
छत की धुंधलाती नक्काशी पर
दुबके डरे-से कबूतर
पंख फड़फड़ाते
गुटर-गूं बुदबुदाते
अहसास कराते
मानो बूढ़ा किला
आह भर रहा हो याद करते हुए अतीत
एक अजीब-सी उदासी भर जाती है सबके मन में
बूढ़ा गाईड अपनी ऐनक के मोटे शीशे पोंछता है
पर्यटक टटोलते हैं अपना कैमरा।

राजा को बस भाए

राजा को भाते है
मुस्कराते-हँसते चेहरे
पर चेहरो पर आए मुस्कान
राजा को करना पडेगा बहुत कुछ
राजा को नही उससे सरोकार
उसे तो बस भाते हैं
मुस्कराते-हँसते चेहरे ।

मुर्गा और सूरज

मुर्गा जानता था
सवेरा होने को है
उसने बाग दी
सवेरा हो गया
सूरज तो
बस अपने काम पर निकला था।

हौसला

बडा, बहुत बडा था वह काम
बडा, बहुत बडा था उसका हौसला
बडा, बहुत बडा था उन दोनो के बीच
बाधाओ का पहाड
पर उससे क्या ?
पहाड तो होते ही हैं पार करने के लिए।

पर्याय

मौन
सूरज का नाम
पिघलता नहीं
पर उसमे बडी आग ।

क्यों

आदमी
कितने प्रकाश वर्ष
दूर
आदमी से।

पाखड

अपनी मृत आत्माओ को
देह मे छिपाए
वे तलाशते रहते हैं।
नित नये आवरण
नगापन फिर भी हमाम से झाँकता है।

बोध

उस लड़ाई का अन्त
यू बुरा तो नही इतना
वह पराजित तो हुआ
पर विजयी शर्मिन्दा था।

विधान

मनु ने तय किया
निम्न करे पाप तो सजा मृत्यु
उच्च करे पाप तो सजा धन दंड
मनु जानता था निम्न के पास धन नही होता।

आस्था

सत्य तो अटल है
ध्रुव की तरह
लाख आते रहे सकट
नही बदलेगा वह अपना स्थान
उसकी उस जिद ने
दिया प्रदीघ निर्वासन
रहा दूर सबसे निपट अकेला
पर मजा चमका मन उसका
ध्रुव की तरह।

पृथ्वी

उसने बताया
वह तो बस माँ है
किसी वाद, दर्शन या राजनीति से
उसका कुछ वास्ता नहीं
पर चश्मदीद गवाहों ने देखा था
वह सबको बराबर-बराबर बांट रही थी।

अगारा

सतह के ठीक नीचे
होगी ही आग
ठेठ भीतर तक गम
राख का विज्ञान यही है
राख का इतिहास यही है ।

प्रतिबद्धता

जमीन का दुख
जडो से होता हुआ
शीप तक पहुँचा
और पेड सूख गया।

पहलू

किसने कहा था
सच की होगी जीत
अन्त मे झूठ हारेगा
हाँ जिसने भी कहा था
माना वह घोर आशावादी था
मगर कितना बडा वीर भी ।

अजलि भर आश्रय

घेरे से निकलकर
धूप फिर
निकल आयी
तुम्हारे चेहरे पर
चलो, आज इसका जश्न मना ले
वरना
क्या मज़ाक है
फिर निकल आना
धूप का
सायो के पहरो के बावजूद

तुम सूरजमुखी भी नही बन सकते ना
कोशिश तो करो
या छोडो
अभी
तबीयत को चटख जाने दो
पहले,
तब तक
धूप को रोके रखना
यू ही
मुझे भी इसकी तुमसे
कुछ कम नही है
दरकार!

हाँ तुम से

तुमने मुझसे कहा
लिखो एक कविता प्यार की मेरे लिए
मैंने लिखी
पेड पहाड आसमान बादल
नदी पुल झरना हँसी चिडिया
सब कुछ था उसमे
मगर 'प्यार' शब्द नही था उसमे कही लिखा
तुमने पढी कविता
और देखा मुझे
तुम्हारी देखती उन आँखो मे
पढी मैंने एक लम्बी कविता
एक शब्द की
वह शब्द 'प्यार' था।

सहयात्री

उस पार ज़िन्दगी हो
कि न हो
पर यह तय है
इस पार ज़िन्दगी आ सकती है
तुम चाहो तो ।

मुक्ति जिसका धर्म

हाथों मे भरकर
बन्द कर दो रेत को
फिसलती रहेगी रेत
मछली की तरह
मुट्ठी से

क्या कभी
कैद हो पाएगी
रेत।

मनुष्य और घोडा

तलाश किसकी करते हो !
घास पत्ती चारा-खल दाना पानी की ?

घोडे से कभी मत पूछो यह सवाल
वह भूख नही होगी तो
कभी नही खाएगा

घोडे और आदमी मे
फर्क गिनाओ तो
इसे भी जरूर करो
रेखांकित ।

